BA Part I (H)
Paper I

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण (संस्थाएं) => बच्चे के समाजीकरण में अनेक संस्थाओं का योगदान होता है। व्यक्ति इन संस्थाओं एवं समूहों से जितना अनुकूलन करता है समाजीकरण भी उतना ही सफल माना जाता है। समाजीकरण की प्रमुख संस्थाओं व समूहों का उल्लेख इस प्रकार है —

(1) परिवार - समाजीकरण करने वाली संस्थाओं में परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि बालक परिवार में ही जन्म लेता और सर्वप्रथम परिवार के सदस्यों के ही सम्पर्क में आता है। परिवार में ही उसे समाज के रीति-रिवाजों, लोकाचारों, प्रथाओं एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जाता है। समय और महत्व की दृष्टि से परिवार समाजीकरण करने वाली प्राथमिक संस्था है।

(2) क्रीड़ा समूह - समाजीकरण की दृष्टि से बच्चे के लिए मित्रों का समूह अथवा 'खेल समूह' एक महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह है। परिवार के बाद वह अपने हम जोलियों एवं खेल के साथियों के सम्पर्क में आता है जो उसके हम उम्र होते हैं ये लोग उसे अपनी परिस्थिति एवं वर्ग के मूल्यों से परिचित कराते हैं।

(3) पड़ोस – पड़ोस का भी बच्चों के समाजीकरण में महत्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चों के ही नहीं वरन् युवकों के समाजीकरण में भी पड़ोस का विशेष योगदान होता है। पड़ोस के लोग बच्चे को स्नेह एवं प्यार में कई नई बातों का ज्ञान कराते हैं, उनकी प्रशंसा एवं निन्दा के द्वारा उन्हें समाज-सम्मत व्यवहार करने को प्रेरित करते हैं।

(4) नातेदारी समूह – नातेदारी समूह में रक्त एवं विवाह से सम्बन्धित सभी रिश्तेदार आते हैं। जैसे-चाचा, पति-पत्नी, साला-साली, सास-श्वसुर, देवर-भाभी और अन्य सभी सम्बन्धियों के सम्पर्क से व्यक्ति कुछ न कुछ सीखता ही है।

(5) विवाह – विवाह का भी व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विवाह के बाद लड़के व लड़की को पति व पत्नी की भूमिका निभानी होती है। विवाह के बाद लड़के-लड़की को नये दायित्वों का निर्वाह करना होता है।

उपर्युक्त प्राथमिक संस्थाओं के अतिरिक्त वर्तमान समय में अनेक द्वैतीयक संस्थाएं भी समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

(6) शिक्षण संस्थाएं – शिक्षण संस्थाओं में बच्चा प्रमुख रूप से गुरुजनों, पाठ्यपुस्तकों एवं साहित्य तथा कक्षा के साथियों से अनेक बातें सीखता है।

(7) राजनीतिक संस्थाएं – व्यक्ति के समाजीकरण में राजनीतिक संस्थाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण है। ये संस्थाएं व्यक्ति को आत्म बोध कराती हैं। तानाशाही एवं प्रजातन्त्रीय शासन में भिन्न-भिन्न प्रकार का समाजीकरण होता है।

(8) आर्थिक संस्थाएं – आर्थिक संस्थाएं व्यक्ति को जीवन-यापन के लिए समर्थ बनाती हैं। इनके द्वारा हम यह सीखते हैं कि बाजार, बैंक व दुकान में किस प्रकार से व्यवहार करें। ये संस्थाएं ही व्यक्ति को व्यावसायिक संघों से परिचित कराती हैं।

(9) धार्मिक संस्थाएं ⇒ व्यक्ति के जीवन पर धर्म का गहरा प्रभाव होता है। ईश्वरीय भय एवं श्रद्धा के कारण वह नैतिकता तथा अन्य गुणों को ग्रहण करता है। व्यक्ति में पवित्रता, न्याय, भक्ति, सच्चरित्रता, कर्तव्यपरायणता, दया, ईमानदारी आदि ~~का~~ गुणों का विकास करने में धर्म प्रमुख भूमिका निभाता है।

(10) <u>सांस्कृतिक संस्थाएं</u> ⇒ आधुनिक समाज में अनेक सांस्कृतिक संस्थाएं जैसे संगीत अकादमी, नाटक-मण्डली, कवि सम्मेलन एवं क्लब आदि व्यक्ति के विकास में योग देती हैं। ये संस्थाएं व्यक्ति को अपनी संस्कृति से परिचित कराती हैं।